संजय की कलम से ..

मौत को कैसे जीता जाये ?

जिस कलियुगी लोक में अब हम रह रहे हैं, उसे 'मृत्युलोक' कहा जाता है। इस लोक का कोई भी प्राणी ऐसा नहीं जो मौत के मुँह में न आता हो। हाँ, मौत का कारण भिन्न-भिन्न हो सकता है। यहाँ मृत्यु के समय का कोई भरोसा नहीं। वृद्ध माता-पिता के देखते ही देखते काल उनके बच्चों को ग्रास बनाकर चला जाता है। प्रत्यक्ष है कि यहाँ मनुष्य को मौत पर विजय प्राप्त नहीं है।

यहाँ हर-एक जीव मौत से घबराता है और उससे मुक्ति पाना चाहता है। यहाँ खाना-पीना, सोना-जागना इत्यादि प्रत्येक क्रिया जीवन को स्थिर रखने के लिए अर्थात् मृत्यु से बचने की इच्छा से होती है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है, 'मैं अमर हो जाऊँ' या मैं फिर कभी 'जन्म-मरण में न आऊँ।'

प्रश्न यह है कि मौत से मनुष्य भयभीत क्यों होता है? इसके कई कारण हैं, जीवनकाल में जिस मनुष्य ने पाप-विकर्म किये हैं, वह उनके परिणामस्वरूप दण्ड (दुख) से भयान्वित होता है। अज्ञानी मनुष्य को भी भय रहता है कि मालूम नहीं मरने के पश्चात् कहाँ जाऊँगा, मेरी क्या गति होगी? सारा जीवनकाल विषय-विकारों की याद में व्यतीत करने के कारण मरते समय मनुष्य का मन तो स्थिर होता नहीं अत: आत्मा विषय-विकारों की याद में तड़प-तड़प कर प्राण छोड़ती है। वह सोचता है कि अभी जो धन-दारा, पुत्र-पौत्र, सुख-सम्पत्ति, महल-माड़ियाँ हैं, जिनकी प्राप्ति में मैंने जीवन लगा दिया, मरने पर उनका उपयोग न कर सकूँगा, अमुक-अमुक वस्तुएँ सेवन कर मुझे तृप्त होना था पर मेरी यह तृष्णा अब पूर्ण न हो सकेगी। अभी तो मुझे अमुक-अमुक व्यक्ति याद करते, प्यार देते तथा मेरी उपयोगिता समझते थे परन्तु मरने के बाद तो मेरी याद और मेरा नाम ही मिट जायेगा। इसलिए मनुष्य मौत और मौत की याद से दुखी होता है।

यदि मनुष्य का बुद्धियोग स्थिर हो, देह के अनेक सम्बन्धियों और विषयों की याद में न भटके तो उसे मौत और उसकी याद दुखद नहीं लगेंगे। यदि मनुष्यात्मा देही-भाव में टिकना जाने तो शरीर छोड़ते समय उसे कष्ट नहीं होगा। अतएव मौत को जीतने का अर्थ हुआ जीवन-मुक्त देवपद पाना क्योंकि देवता अमर गाये जाते हैं, उनका जन्म दुखमय नहीं होता, वे स्वरूपस्थित होते हैं और उनको कोई भी वस्तु अप्राप्त नहीं होती। ❖

अमृत-सूची

- कर्मों का खाता - 3 *(सम्पादकीय)*..... 4
- स्वर्ण जयन्ती की.....6
- 'पत्र' संपादक के नाम 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..8
- ईश्वरीय कारोबार में 10
- दिलाराम ने खोले.....13
- तीव्र तपन से क्या सीखें हम? .14
- ज्ञानामृत *(कविता)* 14
- सच्ची सुंदरता 15
- बेफ़िकर बादशाह 16
- मेरा तो घर.. *(कविता)* 17
- बाल मनोविज्ञान 18
- नवरात्रि का आध्यात्मिक 21
- रंग अलग लेकिन रंगत एक ..23
- बन्दर, बच्चा और.....25
- हजारों भुजाओं वाले बाबा ...26
- ज्ञानामृत पढ़कर.....27
- सचित्र सेवा समाचार 28
- सार्वभौमिक बंधुत्व.....30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- गहराता मूल्य संकट.....33
- मेरे प्यारे भारत *(कविता)* 34

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

ईश्वरीय शक्तियों और वरदानों से भरपूर अनेक मनभावन राखियाँ ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त हुई हैं। स्नेही प्रेषक बहनों को हार्दिक आभार और दिल की दुआयें!